पेड़-पौधों में मौजूद हैं गुर्दे बचाने के औषधीय गुण

मधुमेह रोग में सबसे अधिक किडनी पर प्रभाव पड़ता है। वर्ष 2019 में देश में इस रोग से 7.7 करोड़ रोगी ग्रस्त थे और यह अनुमान लगाया जा रहा है कि वर्ष 2045 तक इस रोग से 13.4 करोड़ पीड़ित हो जायेंगे। इस रोग से 10 फीसदी लोगों की मृत्यु तो किडनी फेल होने के कारण हो जाती है। एक अध्ययन द्वारा यह पता लगाया गया है कि अपने देश में लगभग 400 से अधिक ऐसे पौधे पाए जाते हैं जिनसे मधुमेह के इलाज की दवाइयां बनाई जा सकती हैं। इनमें से कुछ पौधे ऐसे भी हैं जो विशेषरूप से किडनी के इलाज के लिए भी कारगर हैं। मधुमेह रोग में किडनी खराब होने का खतरा ज्यादा होता है।





नीम, कुरकुमालौंग, लहसुन, अदरक, अंगूर, मेथी, करेला, अनार, शतावरी मुंगना, उलटकंबल तथा श्योनाक प्रमुख ऐसे पौधे हैं, जिनमें हाईपोग्लेसमिक गुण मिलते हैं। इनके सेवन से रक्त में शर्करा का स्तर कम होता है जो कि मधुमेह रोगियों के लिए फायदेमंद है।अत: यह कहा जा सकता है कि इन पौधों में मधुमेहरोधी गुण विद्यमान होते हैं। इस प्रकार इन औषधीय पौधों से बनी दवाओं से किडनी के रोगों का इलाज संभव है। इसका दावा करंट साइंस जर्नल में प्रकशित एक अध्ययन द्वारा किया गया है। इस जर्नल में ऐसे कई पौधों के विषय में चर्चा की गयी है और इनका चूहों पर परीक्षण भी किया जा चुका है ।

चूहों में परीक्षण के दौरान यह देखा गया है कि इन पौधों में एंटीऑक्सीडेंट गुण विद्यमान हैं, जो किडनी में ऑक्सीडेटिव तनाव को नियंत्रित करते हैं।शरीर में जब एंटी ऑक्सीडेंट और फ्री रेडिकल तत्वों का तालमेल बिगड़ जाता है तो इससे किडनी की कोशिकाओं



तथ्य

- मधुमेह रोगियों में किडनी फेल होने की आशंका 30 से 40 फीसदी तक होती है।
- गुर्दे फेल होने के कारण 10 फीसदी तक के मामले मृत्यु का कारण होते हैं।
- 65 फीसदी आबादी प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल के लिए इन औषधीय पौधों पर निर्भर है।



की हानिकारक तत्वों से लड़ने की क्षमता घट जाती है, जिससे वे कमजोर होने लगती हैं। लेकिन इन औषधीय पौधे के सेवन से इस तालमेल का संतुलन बना रहता है।

ऐसा माना गया है कि प्रकृति में ही सभी रोगों का इलाज निहित है, आवश्यकता केवल इस बात की है इन पौधों पर गहन परीक्षण किए जाएं और आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के मानकों का प्रयोग करके दवाएं बनायी जाएं जो इन औषधीय पौधों से ही तैयार की जाएं। ■